

भाषा हिन्दी

विविध स्मरणीय महत्वपूर्ण विन्दु

- 1 हिन्दी भाषा का प्रारंभ कब से माना जाता है ?- 1000 ई. से
- 2 हिन्दी भारत के कितने राज्यों की राजभाषा है ?- दस राज्यों की
- 3 हिन्दी की देवनागरी वर्णमाला में कुल कितने वर्ण हैं ?- 52 वर्ण
- 4 ध्वनि संकेतों को स्थायी रूप देने के लिए किसकी खोज की गई ? - लिपि की
- 5 भारतीय संविधान में किस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में चिन्हित किया गया है ?- हिन्दी भाषा को
- 6 किंडरगार्टन विधि के आविष्कारक कौन हैं ?- फ्रोबेल
- 7 देवनागरी लिपि एक लिपि है।- वैज्ञानिक लिपि
- 8 त्रि-भाषा सूत्र में कितनी भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य रूप से किया जाता है ?- तीन भाषा का
- 9 'भाषा एक सांकेतिक साधन है।' यह किसकी युक्ति है ? - बाबूराम सक्सेना की
- 10 संस्कृत के महान वैयाकरण पाणिनी ने अपनी महान कृति 'अष्टाध्यायी' में व्याकरण को क्या कहा है ? - शब्दानुशासन कहा है
- 11 हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा कब प्रदान किया गया ? - 14 सितंबर, 1949 ई.
- 12 भाषा का मानक रूप बालक सीखता है ?- विद्यालय में
- 13 पंचतंत्र किसी रचना है ?- विष्णु शर्मा
- 14 कालीदास की सर्वप्रसिद्ध रचना है ?- अभिज्ञानशाकुन्तलम्
- 15 अष्टाध्यायी किनकी रचना है ?- पाणिनी
- 16 गीतांजलि के रचनाकार हैं ?- रवीन्द्रनाथ टैगोर
- 17 'ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भरलो पानी' गीत के रचनाकार हैं- कवि प्रदीप
- 18 हिन्दी का सर्वप्रथम अखबार (पत्र) का क्या नाम है ? - उदण्त मार्तण्ड
- 19 राष्ट्र कवि की उपाधी किस कवि को दिया गया है ?- मैथिलीशरण गुप्त
- 20 सुप्रसिद्ध मैथिली 'पदावली' के रचनाकार कौन हैं ?- विद्यापति
- 21 प्रसिद्ध तिलस्मी उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' के रचनाकार कौन हैं ?- देवकी नन्दन खत्री
- 22 प्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' के रचयिता कौन हैं ?- प्रेमचन्द
- 23 ज्ञानपीठ पुरस्कार किस क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य के लिए दिया जाता है ?- साहित्य क्षेत्र
- 24 'रंगभूमि' उपन्यास के रचनाकार हैं ?- प्रेमचन्द
- 25 'अंधा युग' उपन्यास के लेखक हैं ?- धर्मवीर भारती
- 26 दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा का मुख्यालय कहाँ स्थित है ?- चेन्नई
- 27 हिन्दी में मूल रूप से कितने रस माने गए हैं ?- नौ
- 28 मैथिली शरण गुप्त को राष्ट्र कवि की उपाधी किस रचना के लिए मिली।- भारत-भारती
- 29 वर्तमान में प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'हंस' के संपादक हैं ?- राजेन्द्र यादव
- 30 राजभाषा सूची में कितनी भारतीय भाषा शामिल हैं ?- 22 भाषा

महत्वपूर्ण पर्यायवाची शब्द

- असुर - दानव, दैत्य, राक्षस, निशाचर, रजनीचर
- अमृत - सुधा, सोम, पीयूष, अमी
- अधर - ओष्ठ, ओठ,
- अध्यापक - आचार्य, गुरु, शिक्षक, प्रवक्ता, व्याख्याता
- अन्वेषण - गवेषणा, खोज, शोध, अनुसंधान
- अपमान - अनादर, अवमान, बेइज्जती, अवज्ञा, तिरस्कार, निरादर
- अप्सरा - सुरबाला, देवबाला,
- अंश - भाग, हिस्सा, खण्ड,
- आलसी - काहिल, निकम्मा, निरुद्यमी
- आँसू - अश्रु, नयनजल, नेत्रवारि, नयन-नीर
- आतंक - उपद्रव, अतिभय, संत्रास, दहशत
- आश्रम - मठ, विहार, संघ
- आँचल - पल्ला, छोर, दामन, कोर
- इन्द्र - सुरपति, पुरन्दर, कौशिक, देवराज, सुरेन्द्र,
- इनाम - उपहार, पुरस्कार, पारितोषिक
- ईर्ष्या - मत्सर, जलन, डाह, कुढ़न, द्वेष,
- उत्सव - मंगलकार्य, पर्व, जलसा, त्यौहार, समारोह
- उपवास - निराहार, व्रत, अनशन, निर्जल
- वैभव - समृद्धि, सम्पन्नता, सम्पदा, ऐश्वर्य
- व्रत - संकल्प, प्रतिज्ञा, दृढ़ निश्चय
- शंकर - शिव, शम्भू, भोलेनाथ, महादेव, देवाधिदेव, कैलाशपति
- शरीर - काया, गात, तन, अंग, बदन
- शस्त्र - अस्त्र, हथियार, आयुध
- श्मशान - मरघट, दाहस्थल, कब्रगाह
- संन्यासी - बैरागी, त्यागी, परिव्राजक
- सन्ध्या - निशारम्भ, दिनावसान, सायंकाल, गोधूलि, प्रदोषकाल
- समिति - संस्था, संस्थान, संघ, संघटन, मण्डली
- समीक्षा - आलोचना, निरूपण, विवेचना, समालोचना, मीमांसा
- समुद्र - सिन्धु, जलधि, पयोधि, पारावार, पयोनिधि, वारीश, वारिधि
- सरस्वती - भारती, शारदा, वीणा, बीणापाणि, हंसवाहिनी, वीणावादिनी, पुस्तकधारिणी
- सम्राट् - अधिपति, शहंशाह, राजाधिराज, महासजा, नपति
- सर्प - अहि, भुजंग, मणिधर, विषधर, व्याल, फणी, उरग, नाग
- सान्त्वना - दिलासा, आश्वासन, ढाढ़स
- सुख - आनन्द, चैन, मजा, परितोष
- सूर्य - रवि, भानु, दिनकर, भास्कर, अर्क, कमलबन्धु, आदित्य, मारीचिमाली
- स्त्री - नारी, प्रिया, अबला, वनिता, महिला, रमणी, कामिनी, भगिनी, भार्या, ललना, वामा, कान्ता, सुन्दरी
- स्तुति - प्रार्थना, पूजा, आराधना, अर्चना

- स्वर्ग - देवलोक, सुरलोक, इन्द्रपुरी, बैकुण्ठ, सुरपुर
- स्वर्ण - सुवर्ण, कंचन, जातरूप, सोना, तामरस, कनक
- हंस - मराल, सरस्वती वाहन,
- हनुमान - पवनसुत, पवनकुमार, रामदूत, मारुतिनन्दन, कपिश, पवनपुत्र
- हरि - बन्दर, इन्द्र, विष्णु, चन्द्र
- हाथी - हस्ती, गज, कुंजर, कुम्भी, मतंग, व्याल, वितुण्ड, द्विप
- हिमालय - हिमगिरि, हिमपति, हिमाद्रि, हिमांचल, नगराज, गिरिराज
- हिरण - मृग, सारंग, हरिण, कुरंग चितल, बारहसींगा
- हाथ - हस्त, कर, बाँह, पाणि, भुजा
- कठिन - कठोर, दुष्कर, दुर्गम, कष्टसाध्य और श्रमसाध्य
- कुशल - दक्ष, पारंगत, निपुण, प्रवीण, निष्णात, विशेषज्ञ
- दया - कृपा, सान्त्वना, राजदया, क्षमा, अनुकम्पा, अनुग्रह, सहानुभूति
- दुःख - कष्ट, व्यथा, क्लेश, विषाद, सन्ताप, शोक, वेदना

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

- | | |
|---|---------------------|
| • पृथ्वी और आकाश के बीच का स्थल | - अन्तरिक्ष |
| • जो आगे की सोचता हो | - अग्रसोची |
| • जो कभी नहीं मरता | - अमर्त्य |
| • जो दिखायी न पड़े | - अदृश्य |
| • जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके | - अगोचर, अतीन्द्रिय |
| • जो सबके अन्तःकरण की बात जानने वाला हो | - अन्तर्यामी |
| • जो खाया न जा सके | - अखाद्य |
| • जिसके टुकड़े न हो सके | - अखण्ड |
| • जो मानव के योग्य न हो | - अमानवीय, अमानुषिक |
| • जिसका अन्त न हो | - अनन्त |
| • जिसके समान कोई दूसरा न हो | - अद्वितीय |
| • जिसकी उपमा न हो | - अनुपम, अनुपमा |
| • जिसकी आशा न की गयी हो | - अप्रत्याशित |
| • अनुकरण करने-योग्य | - अनुकरणीय |
| • अनुसरण करने-योग्य | - अनुसरणीय |
| • अवसर के अनुरूप बदल जानेवाला | - अवसरवादी |
| • बिना वेतन काम करनेवाला | - अवैतनिक |
| • जिसके आने की कोई तिथि न हो | - अतिथि |
| • जो कुछ नहीं जानता हो | - अज्ञानी |
| • जो किसी पर अभियोग लगाये | - अभियोगी |
| • जिसका कभी अन्त न होने वाला हो | - अविनाशी |
| • जिस स्त्री के पुत्र और पति न हो | - अवीरा |
| • जो अवश्य होने वाला हो | - अवश्यम्भावी |

- सूर्योदय से पूर्व का समय
- अधिक बढ़ा-चढ़ा कर कहना
- अन्य भाषा में परिणति
- आश्रय देने वाला
- जाँघों/घुटनों तक भुजाओं वाला
- जिसकी परिभाषा देना असम्भव हो
- जो पीछे चलता हो
- जिसका शत्रु न जन्मा हो
- जिसके पास कुछ न हो
- जो अभी तक न आया हो
- जो वस्तु दूसरे के यहाँ रखी हो
- जिसे बुलाया न गया हो
- जिस पर अभियोग लगाया गया हो
- जो ईश्वर को मानता हो
- अपने जीवन का स्वलिखित इतिहास
- आशा से अधिक
- आदि से अन्त तक
- आकाश में उड़नेवाला
- जो अपनी हत्या आप करे
- सिर से पैर तक
- इन्द्रियों से परे
- जो सब कुछ उदारता से देना जानता है
- जो ऊपर कहा गया हो
- किसी के बाद उसका स्थान लेनेवाला
- उपहास के योग्य
- अरुणोदय से पूर्व का समय
- जिसका चित्त एक ही विषय में लगा हो
- जो निजी पुत्र हो (एक माँ के पेट से उत्पन्न)
- जो कल्पना से परे हो
- जो कम खर्च करनेवाला हो
- अच्छे कुल में जन्म लेनेवाला
- इच्छानुसार रूप धारण करनेवाला
- भय-शोकादि के कारण कर्तव्य-ज्ञान से रहित
- जो पहाड़ को धारण करता हो
- जो बात छिपायी जाए
- जो घृणा के योग्य हो
- जो सदा से चला आ रहा हो
- जिसके चार पद (पैर) हों
- जल-थल, दोनों जगह रहनेवाला

- अरुणोदय
- अतिशयोक्ति
- अनुवाद, रूपान्तरण
- आश्रयदाता
- अजानुबाहु
- अपरिभाषित
- अनुयायी अनुचर
- अजातशत्रु
- अकिंचन
- अनागत
- अमानत, धरोहर
- अनाहूत
- अभियुक्त
- आस्तिक
- आत्मकथा
- आशातीत
- आद्यान्त
- आकाशचारी
- आत्मघाती
- आपादमस्तक
- इन्द्रियातीत
- उदारमना
- उपर्युक्त
- उत्तराधिकारी
- उपहासास्पद
- उषाकाल, ब्राह्ममुहूर्त
- एकाग्रचित्त
- औरस
- कल्पनातीत
- कंजूस, मितव्ययी
- कुलीन
- कामरूप
- किङ्कर्तव्यविमूढ़
- गिरिधारी
- गोपनीय
- घृणित
- चिरन्तन, शाश्वत्
- चौपाया
- जलभूमिया (उभयचर)

- जो इन्द्रियों को वश में कर ले
- जीने की प्रबल इच्छा
- गोद लिया हुआ पुत्र
- जंगल की आग
- जो ईश्वर को न मानता हो
- जो आमिष (मांस) न खाता हो
- जो कामनारहित हो
- जिसका कोई आधार न हो
- देश से बाहर माल भेजना
- शासकीय अधिकारियों का शासन

• ग्रन्थ के बचे हुए अंश जो प्रायः अन्त में जोड़े जाते हैं - परिशिष्ट

- जो दूसरों का भला करता हो
- जिसका जन्म पृथ्वी से हुआ हो
- जिसकी पूजा की जा सके
- उपकार के बदले किया गया कार्य
- जिससे पापों का नाश हो
- इतिहास के युग से पूर्व का
- जो देखने में प्रिय लगे
- दोपहर के पहले का समय
- जो केवल फल खाकर रहता हो
- जो एक से अधिक भाषाएँ जानता हो
- जो व्यक्ति भाग्य पर विश्वास करे
- दोपहर का समय
- मनपसन्द अथवा नामांकित
- जो मृत्यु के समीप हो
- जो अपने मार्ग से भटक गया हो
- जो मांस खाता हो
- जो मृत्यु को जीत ले
- जिसे मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा हो
- मरने की इच्छा रखनेवाला
- अपनी शक्ति-भर
- जो युद्ध में स्थिर रहता हो
- जहाँ नाटक खेला जाता है
- जो लोहे की तरह बलिष्ठ हो
- जो बात वर्णन के बाहर हो
- जो बहुत अधिक बोलता हो
- जिस स्त्री का पति जीवित न हो
- जिस पुरुष की पत्नी मर चुकी हो
- जो व्याकरण को अच्छी तरह जाननेवाला हो

- जितेन्द्रिय
- जिजीविषा
- दत्तक
- दावानल
- नास्तिक
- निरामिष
- निष्काम
- निराधार
- निर्यात

- नौकरशाही, लालफीताशाही

- परोपकारी
- पार्थिव
- पूज्य, पूजनीय
- प्रत्युपकार
- प्रायश्चित्त
- प्रागैतिहासिक
- प्रियदर्शी
- पूर्वाह्न
- फलाहारी
- बहुभाषी
- भाग्यवादी
- मध्याह्न
- मनोनीत
- मरणासन्न
- मार्गभ्रमित
- मांसाहारी
- मृत्युञ्जय
- मुमुक्षु
- मुमूर्षु
- यथाशक्ति
- युधिष्ठिर
- रंगमंच
- लौहपुरुष
- वर्णनातीत
- वाचाल
- विधवा
- विधुर
- वैयाकरण

- जो शक्तिशाली हो
- जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता
- जिसके सिर पर चन्द्रमा हो
- जहाँ नदियाँ मिलती हों
- अच्छे आचरण करनेवाला
- जो सबको एक-सा देखता हो
- जो सब कुछ जानता हो
- जिसे अक्षर-ज्ञान हो (जो लिखना-पढ़ना जानता हो)
- उच्चवर्गीय शासन
- जिसकी सीमा न हो
- जिसकी ग्रीवा (गरदन) सुन्दर हो
- अच्छी आँखोंवाली स्त्री
- स्त्री के वश में रहनेवाला
- जो अपने से उत्पन्न हो
- मिठाई बनाकर बेचनेवाला व्यक्ति
- जो क्षमा पाने-योग्य है
- जो शीघ्र नष्ट होनेवाला हो
- जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखायी पड़ें
- जो तीनों लोकों का स्वामी हो

- शक्तिमान्
- शब्दातीत
- शशिधर
- संगम
- सदाचारी
- समदर्शी
- सर्वज्ञ
- साक्षर
- सामन्तशाही
- सीमातीत
- सुग्रीव
- सुनयना
- स्त्रैण
- स्वयंभू
- हलवाई
- क्षम्य
- क्षणभंगुर
- क्षितिज
- त्रिलोकीनाथ

विपरीतार्थक शब्द

अतिवृष्टि	-	अनावृष्टि	वाचाल	-	मूक
सूक्ष्म	-	स्थूल	आहार	-	निराहार
सृष्टि	-	प्रलय	अर्वाचीन	-	प्राचीन
दास	-	स्वामी	उत्तरार्द्ध	-	पूर्वार्द्ध
आलोक	-	अन्धकार	आदर	-	निरादर
जाग्रत	-	सुषुप्त	साकार	-	निराकार
पुण्य	-	पाप	कृतज्ञ	-	कृतघ्न
सरस	-	नीरस	घृणा	-	प्रेम
लौकिक	-	पारलौकिक	अपकार	-	उपकार
जन्म	-	मरण	प्रत्यक्ष	-	परोक्ष
योग	-	भोग	सुगम	-	दुर्गम
कनिष्ठ	-	वरिष्ठ	सधवा	-	विधवा
संयोग	-	वियोग	आयात	-	निर्यात
पण्डित	-	मूर्ख	ज्ञानी	-	अज्ञानी
सदाचार	-	दुराचार	सजीव	-	निर्जीव
औपचारिक	-	अनौपचारिक	प्रशंसक	-	निन्दक
अतिवृष्टि	-	अनावृष्टि	शाश्वत	-	क्षणिक

सार्थक	-	निरर्थक	कायर	-	निडर
मुक्ति	-	बन्धन	खण्डन	-	मण्डन
रिक्त	-	सिक्त	भूत	-	भविष्य
ह्रस्व	-	दीर्घ	मानव	-	दानव
वादी	-	प्रतिवादी	लघु	-	दीर्घ
वरिष्ठ	-	कनिष्ठ	तरुण	-	वृद्ध
विदेशी	-	स्वदेशी	देव	-	दानव
अनुकूल	-	प्रतिकूल	दक्षिण	-	वाम
जंगम	-	स्थावर	प्रधान	-	गौण
आस्तिक	-	नास्तिक	बन्धन	-	मोक्ष
छूत	-	अछूत	बाढ़	-	सूखा
सज्जन	-	दुर्जन	उदार	-	अनुदार
सुगन्ध	-	दुर्गन्ध	सत्य	-	मिथ्या
अवलम्ब	-	निरालम्ब	उत्थान	-	पतन
आकाश	-	पाताल	बर्बर	-	सभ्य
दुर्लभ	-	सुलभ	मिलन	-	वियोग
कदाचार	-	सदाचार	रक्षक	-	भक्षक
अधम	-	श्रेष्ठ	विस्तार	-	संक्षेप
अनिवार्य	-	वैकल्पिक	व्यष्टि	-	समष्टि
रूढ़िवादी	-	स्वच्छन्दवादी	श्रीगणेश	-	इतिश्री
पूर्ववर्ती	-	परवर्ती	भौतिक	-	आध्यात्मिक
आवाहन	-	विसर्जन	तुच्छ	-	महान्
पराधीन	-	स्वाधीन	प्राचीन	-	अर्वाचीन
अर्पण	-	ग्रहण	आशा	-	निराशा
खरीद	-	बिक्री	यश	-	अपयश
अमावस्या	-	पूर्णिमा	वाद	-	प्रतिवाद
निन्दा	-	स्तुति	गमन	-	आगमन
जीवन	-	मरण	गोचर	-	अगोचर
नूतन	-	पुरातन	नैतिक	-	अनैतिक
उग्र	-	सौम्य	स्वीकृत	-	अस्वीकृत
गहरा	-	छिछला	विवाद	-	निर्विवाद
गुरु	-	- लघु	सामिष	-	निरामिष
पाश्चात्य	-	पौरवात्य	चेतन	-	अचेतन
परकीया	-	स्वकीया	आहत	-	अनाहत
प्राचीन	-	नवीन	अन्तरंग	-	बहिरंग
सबल	-	निर्बल	आरोहण	-	अवरोहण
गरल	-	सुधा	उत्तीर्ण	-	अनुत्तीर्ण
गुप्त	-	प्रकट	आगम	-	अनागम
स्वार्थ	-	परमार्थ	आश्रित	-	अनाश्रित

आस्था	-	अनास्था	आग्रह	-	दुराग्रह
अनुरक्त	-	विरक्त	कनिष्ठ	-	वरिष्ठ
पराधीन	-	स्वाधीन	संयोग	-	वियोग
प्रकाश	-	अन्धकार	विशेष	-	सामान्य
हर्ष	-	विषाद	राजतन्त्र	-	लोकतन्त्र
वरदान	-	अभिशाप	ऋणात्मक	-	धनात्मक
औपचारिक	-	अनौपचारिक	अनुग्रह	-	विग्रह
समास	-	विग्रह	अटल	-	चंचल
आरोहण	-	अवरोहण	आविर्भाव	-	तिरोभाव

अनेकार्थक शब्द

अनेकार्थक शब्द वे हैं जो अलग-अलग प्रसंगों में भिन्न-भिन्न शब्दों के साथ प्रयोग होते हैं और प्रसंगानुसार अर्थ देते हैं। ये पर्यायवाची शब्द के समतुल्य होते हैं।

- **अकाल** - दुर्भिक्ष, अभाव, असमय
- **अनन्त** - विष्णु, ब्रह्मा, आकाश, अन्तहीन
- **अमृत** - जल, दूध, स्वर्ण, गिलोय
- **अम्बर** - वस्त्र, आकाश, कपास, मेघ
- **अशोक** - शोकरहित, अशोक-वृक्ष, सम्राट्
- **अतिथि** - मेहमान, साधु, यात्री, अपरिचित
- **अध्यक्ष** - सभापति, विभाग का प्रमुख इंचार्ज
- **अवस्था** - उम्र, दशा, स्थिति, परिस्थिति
- **अवैध** - गैर-कानूनी, नाजायज
- **अम्बुज** - कमल, बेत, ब्रह्मा, शंख
- **अलि** - भौरा, मदिरा, सखी
- **आँख** - नेत्र, दृष्टि, निगरानी
- **आचार्य** - गुरु, महापण्डित, प्रधानाचार्य, प्रवक्ता
- **इन्द्र** - श्रेष्ठ, देवताओं का राजा, प्रतापी, सूर्य, बिजली,
- **उमा** - पार्वती, दुर्गा, हल्दी, कान्ति
- **कनक** - सोना, धतूरा, टेसू, पलाश
- **कपि** - बन्दर, हाथी, सूर्य, हनुमान
- **कन्या** - कुमारी, राशि, पुत्री, लड़की
- **कलम** - कर्णिका, लेखनी, कूँची, कनपटी के बाल, पेड़-पौधों की हरी लकड़ी
- **खल** - दुष्ट, खरल, चुगलखोर, धतूरा, कूटने का पात्र
- **खीर** - दूध, पायस, एक फल
- **गोली** - बन्दूक की गोली, धागे की गोली, कूँचा, दवाईवाली गोली
- **गोपाल** - गाय पालनेवाला, कृष्ण, ग्वाला
- **चाक** - कुम्हार का चाक, चक्की, गोल वस्तु, बवण्डर
- **तिलक** - टीका, राज्याभिषेक, एक गहना, श्रेष्ठ व्यक्ति

- तीर - नदी, तट, बाण, समीप
- द्विज - अण्डज, प्राणी, पक्षी ब्राह्मण, चन्द्रमा, दाँत, तारा
- धर्मराज - न्यायाधीश, यमराज, युधिष्ठिर
- नायक - सेनापति, सेनाधिकारी, मुखिया, मुख्य पात्र
- पतंग - सूर्य, पक्षी, गुड्डी, फतिगा, नाव
- पुष्कर - तालाब, कमल, पानी
- प्रपंच - झंझट, बखेड़ा मिथ्या, विस्तार
- बिजली - विद्युत्, तड़ित, कर्ण-आभूषण
- भूत - अतीत, प्रेत, पंचभूत, बीता कल
- माया - भ्रम, दौलत, इन्द्रजाल, भगवान की लीला,
- मोहर - अशर्फी, लाख, छाप, ठप्पा
- रक्त - लाल, खून, केसर, रुधिर
- लंगर - लोहे का काँटा, जंजीर, लँगोट, नटखट, वह भोजन जो गरीबों में बाँटा जाता है।
- वंश - बांस, कुल, बांसुरी, गोत्र
- वर - दूल्हा, श्रेष्ठ, करने योग्य, वरदान
- सरदार - अगुआ, छोटा शासक, रईस, सिक्ख
- हंस - प्राण, आत्मा, ब्रह्मा, पक्षि-विशेष
- हरि - विष्णु, इन्द्र, सूर्य, घोड़ा, किरण, हंस, कामदेव

समास

परिभाषा - दो अथवा अधिक शब्दों के मध्य की विभक्तियों अथवा लगाव के शब्दों का लोप होकर जिस शब्द का निर्माण होता है, वह सामाजिक पद कहलाता है। शब्दों के इसी संयोग को 'समास' की संज्ञा दी गयी है।

भेद - मुख्यतः समास के 4 प्रकार हैं। वे निम्नलिखित हैं -

1. अव्ययीभाव
2. तत्पुरुष
3. द्वन्द्व
4. बहुव्रीहि।

अव्ययीभाव - जिस समास का प्रथम पद प्रधान हो और वह अव्यय हो, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। लिंग, वचन आदि दृष्टि से इसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता।

कर्मधारय - जिस समास में प्रथम पद विशेषण और अन्तिम पद (संज्ञा, सर्वनाम) हो, वह 'कर्मधारय' समास होता है।

महाकवि	महान है कवि जो
पीताम्बर	पीत है अम्बर जो
चरणकमल	कमल के सदृश चरण
मृगलोचन	मृग के सदृश लोच
चन्द्रमुख	चन्द्रमा के सदृश मुख

द्विगु समास - इस समास में प्रथम पद संख्यावाचक होता है और दूसरा अथवा अन्तिम पद संज्ञा होता है।

चतुर्दिक्	चारों दिशाएं
दोपहर	दो प्रहरों का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
त्रियोगी	तीन युगों का समाहार

द्वन्द्व समास - जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, वह 'द्वन्द्व समास' कहलाता है। इसका विग्रह करने के लिए दो

पदों के बीच 'और' अथवा 'या'-जैसा योजक अव्यय लिखा जाता है।

सीता-राम	सीता और राम
रात-दिन	रात और दिन
माता-पिता	माता और पिता

बहुव्रीहि समास - इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता बल्कि इन पदों के अतिरिक्त तीसरे अर्थ की ही प्राप्ति होती है। जैसे-पीताम्बर। इसके दो पद हैं-पीत + अम्बर। पहला 'विशेषण' और दूसरा 'संज्ञा' अतः इसे कर्मधारय समास होना चाहिए था परन्तु बहुव्रीहि में पीताम्बर का विशेष अर्थ पीत वस्त्र धारण करनेवाले श्रीकृष्ण से लिया जायेगा।

दशानन	दश हैं आनन जिसके अर्थात् विष्णु
चक्रधर	चक्र को धारण करता है जो अर्थात् विष्णु
पीताम्बर	पीत है अम्बर जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण

'सन्धि' और 'समास' में अन्तर

सन्धि	समास
• सन्धि में दो वर्णों का योग होता है।	समास में दो पदों का योग होता है।
• सन्धि के लिए दो वर्णों के मेल और विकार की कर दिये जाते हैं। इन मेल अथवा विकार से कोई मतलब नहीं रहता।	समास में पदों के प्रत्यय समाप्त समास को गुंजाइश रहती है।
• सन्धि के तोड़ने को 'विच्छेद' कहते हैं।	समास का 'विग्रह' होता है।

अव्ययी भाव

पद	विग्रह
दिनानुदिन	- दिन के बाद दिन
भरपेट	- पेट भरकर
यथाशक्ति	- शक्ति के अनुसार
मनमाना	- मन के अनुसार
यथाशीघ्र	- जितना शीघ्र हो
आपादमस्तक	- पाद से मस्तक तक

तत्पुरुष

गगनचुम्बी	- गगन को चूमनेवाला
पॉकेटमार	- पॉकेट को मारनेवाला
चिड़ीमार	- चिड़ियों को मारनेवाला
काठखोदवा	- काठ को खोदनेवाला
गिरहकट	- गिरह को काटनेवाला
मुंहतोड़	- मुंह को तोड़नेवाला

करण तत्पुरुष

मुँहमाँगा	- मुँह से माँगा
देहचोर	- देह से चोर

सम्प्रदान तत्पुरुष

रसोईघर	- रसोई के लिए घर
--------	------------------

स्नानघर	- स्नान के लिए घर
मालगोदाम	- माल के लिए गोदाम

अपादान तत्पुरुष

धनहीन	- धन से हीन
नेत्रहीन	- नेत्र से हीन
पथभ्रष्ट	- पथ से भ्रष्ट

सम्बन्ध तत्पुरुष

अन्नदान	- अन्न का दान
श्रमदान	- श्रम का दान
चरित्रचित्रण	- चरित्र का चित्रण
राजदरबार	- राजा का दरबार
देवालय	- देव का आलय
गंगाजल	- गंगा का जल
सेनानायक	- सेना का नायक
राजपुत्र	- राजा का पुत्र
पुस्तकालय	- पुस्तक का आलय

अधिकरण तत्पुरुष

पुरुषोत्तम	- पुरुषों में उत्तम
शरणागत	- शरण में आया हुआ
ध्यानमग्न	- ध्यान में मग्न
दानवीर	- दान में वीर
गृहप्रवेश	- गृह में प्रवेश
आनन्दमग्न	- आनन्द में मग्न

द्विगु

त्रिभुवन	- तीन भुवनों का योग
चवन्नी	- चार आनों का योग
पंचवटी	- पाँच वटों का योग
नवरत्न	- नव रत्नों का योग
त्रिकाल	- तीन कालों का योग
चौराहा	- चार राहों का योग
चतुर्वेद	- चार वेदों का योग

संज्ञा

परिभाषा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद -

- (i) **व्यक्ति वाचक संज्ञा** - जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष, वस्तु विशेष को बताता है। जैसे- राम, गंगा, यमुना, हिमालय, भारत, दिल्ली आदि।
- (ii) **जाति वाचक संज्ञा** - जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु की जाति का बोध कराते हैं। जैसे - लड़का, पहाड़, नदी, देश आदि

जातिवाचक संज्ञा के दो भेद हैं -

- (क) **द्रव्यवाचक संज्ञा** - जिस संज्ञा शब्द से उस सामग्री या पदार्थ का बोध होता है जिससे कोई वस्तु बनी है। जैसे- सोना, चांदी, ऊन, लोहा आदि।
- (ख) **समूहवाचक संज्ञा** - जो संज्ञा शब्द किसी एक व्यक्ति के वाचक न होकर समूह, समुदाय के वाचक हैं। जैसे- पुलिस, परिवार, कक्षा, सभा, समिति आदि।
- (iii) **भाववाचक संज्ञा** - जो संज्ञा शब्द किसी भाव का बोध कराते हैं। जैसे - प्रेम, घृणा, प्रशंसा, सच्चाई, ईमानदारी, प्रार्थना आदि।

लिंग

परिभाषा - संज्ञा के जिस रूप से वस्तु की जाति (स्त्री अथवा पुरुष) का बोध हो, उसे **लिंग** कहते हैं।

लिंग संस्कृत का शब्द है। इसे चिह्न अथवा निशान कहते हैं।

भेद - हिन्दी-व्याकरण में 2 प्रकार के लिंग होते हैं-

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग

1. **पुल्लिंग** - जिस शब्द से किसी पुरुष अथवा नर का बोध हो, उसे **पुल्लिंग** कहते हैं। जैसे - बालक, बैल, गधा, राजा, युवक, सम्राट इत्यादि
2. **स्त्रीलिंग** - जिस शब्द से किसी स्त्री अथवा मादा का बोध हो, उसे **स्त्रीलिंग** कहते हैं। जैसे- बालिका, गाय, गधी, रानी, युवती, साम्राज्ञी इत्यादि

वचन

परिभाषा - संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह एक के लिए प्रयुक्त है अथवा अनेक के लिए, उसे 'वचन' कहते हैं।

1. **एकवचन** - एकवचन से एक ही वस्तु का बोध होता है।
उदाहरण के लिए - लड़का, लेखनी, पुस्तक, हाथी इत्यादि
2. **बहुवचन** - इसमें एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है
उदाहरण के लिए - लड़के, पुस्तकें, घोड़े, कुत्ते इत्यादि

महत्वपूर्ण मुहावरे

- चिराग तले अंधेरा - पण्डित के घर में घोर मूर्खता का आचरण
- बिल्ली के गले में घंटी बाँधना - अपने को संकट में डालना
- अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग-सबका भिन्न-भिन्न मत
- आँख का अंधा नाम नयन सुखा-नाम बढ़ा और गुण उसके विपरीत
- न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी - कार्य करने के लिए कोई असाधारण शर्त रख देना
- बहती गंगा में हाथ धोना - मौके का लाभ उठाना
- दूध का दूध पानी का पानी - ठीक-ठीक न्याय हो जाना
- जले पर नमक छिड़कना - दुःखी व्यक्ति को और दुःखी करना
- हवा में महल बनाना - असम्भव कार्य करने की कोशिश करना
- कागजी घोड़े दौड़ाना - केवल लिखा पढ़ी करना, पर कुछ काम की बात न होना
- कलेजे पर साँप लोटना - डाह करना
- उड़ती चिड़िया पहचानना - मन की बात ताड़ लेना
- हथेली पर सरसों जमाना - असंभव कार्य शीघ्रताशीघ्र कर देना

- घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध - अपने लोगों में आदर नहीं मिलता है
- रस्सी जल गयी पर बल नहीं गया-सर्वनाश हो गया पर घमण्ड नहीं गया
- अधजल गगरी छलकत जाय - छोटे आदमी का बहुत दिखावा करना
- आगे कुआं पीछे खाई - दुविधा में पड़ना
- अक्ल के घोड़े दौड़ाना - व्यर्थ दिमाग लगाना
- अंधे की लाठी होना - सहारा होना
- ऊँट के मुँह में जीरा - जरूरत से बहुत कम
- गड़े मुर्दे उखाड़ना - पुरानी बातों को कुरेदना
- होश उड़ाना - डर जाना
- गुस्सा पीकर रह जाना - बर्दास्त करना
- अंगूठा छाप होना - निरक्षर होना
- अंगार सिर पर धरना - कठिन परिश्रम करना
- अंगुली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना - थोड़ा-सा सहारा पाकर विशेष प्राप्ति की चाह रखना
- अंगूठा दिखाना - ऐन-मौके पर धोखा देना
- अक्ल पर पत्थर पड़ना - बुद्धि भ्रष्ट होना
- अक्ल का दुश्मन होना - मूर्ख होना
- अन्धे को चिराग दिखाना - मूर्ख को उपदेश देना
- अन्धे के आगे रोना - असहाय व्यक्ति से सहायता माँगना
- अन्धों में काना राजा - मूर्खों के बीच सुयोग्य बनना
- अपना उल्लू सीधा करना - अपना स्वार्थ सिद्ध करना
- अपना-सा मुँह लेकर रह जाना - लज्जित होना
- अपनी खिचड़ी अलग पकाना - स्वार्थी होना; अलग होना
- अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना - अपना अहित करना
- अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना - अपनी प्रशंसा स्वयं करना
- आँख का काजल चुराना - गुप्त भावों को जान लेना
- आँख दिखाना - डाँटना, धमकाना
- आँख में धूल झोंकना - धोखा देना
- आँखें चार होना - प्रेम होना, एक दूसरे को देखना
- आँखें मिलाना - सामना करना
- आँखें नीची करना - प्रतिष्ठा नष्ट होना
- आँखों में खून उतर आना - अत्यधिक क्रोध करना
- आँख का अन्धा गाँठ का पूरा - मूर्ख किन्तु धनी व्यक्ति
- आँखों का तारा - अत्यन्त प्यारा
- आँचल पसारना - याचना करना या माँगना
- आँसू पीकर रह जाना - चुपचाप दुःख सह लेना
- आकाश (आसमान) के तारे तोड़ना - असंभव को संभव करना
- आकाश-कुसुम होना - पहुँच से बाहर होना
- आकाश-पाताल एक करना - सारा प्रयास कर डालना

- आकाश टूट पड़ना - अकस्मात् विपत्तियों का आना
- आग में घी डालना - उकसाना, बढ़ावा देना; क्रोध भड़काना
- आटा-दाल का भाव मालूम होना - कष्टों का अनुभव होना
- आठ-आठ आँसू रोना - पछताना
- आधा तीतर आधा बटेर - गड़बड़ का काम
- आपे से बाहर होना - अत्यन्त क्रुद्ध होना
- आबरू लूटना - इज्जत नष्ट करना
- आसमान में उड़ना - कल्पना में उड़ान भरना
- आसमान सिर पर उठाना - आवश्यकता से अधिक परिश्रम करना
- आस्तीन का साँप होना - विश्वासघाती होना
- ईंट का जवाब पत्थर से देना - मुंहतोड़ जवाब देना
- ईंट से ईंट बजाना - नष्ट-भ्रष्ट कर देना (तहस-नहस कर देना)
- दूज/ईद का चाँद होना - बहुत समय बाद दिखायी देना
- उलटी माला फेरना - अनिष्ट की कामना करना
- उलटी गंगा बहाना - असंभव कार्य करना
- उलटे उस्तरे (छुरे) से मूड़ना - मूर्ख बनाकर स्वार्थ सिद्ध करना
- ऊँची दूकान फीका पकवान - आडम्बर-ही-आडम्बर
- न ऊधौ का लेना न माधौ का देना - किसी से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखना
- एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा - बुरे व्यक्ति का बुरा ही सम्पर्क
- एक ही थैली के चट्टे-बट्टे - सबका एकसमान होना
- एक लाठी से सबको हाँकना - सभी के साथ समान व्यवहार करना
- एड़ी चोटी का पसीना एक करना - अत्यधिक परिश्रम करना
- ओखली में सिर देना - जानबूझ कर संकट मोल लेना
- ओछे के प्रीत बालू की भीत-दुष्ट व्यक्तियों की मित्रता क्षणिक होती है
- औंधे मुँह गिरना - पराजित होना
- कंगाली में आटा गीला - मुसीबत में और मुसीबत पड़ना
- कमर कसना - तत्पर रहना, तैयार रहना
- कलई खोलना - भेद प्रकट करना
- कलेजा थामकर रह जाना - कठिनता से धैर्य धारण करना
- कलेजे पर पत्थर रखना - असह्य दुःख बर्दाश्त करना
- काजल की कोठरी - कलंकित होने का स्थान
- काठ का उल्लू - बहुत बड़ा मूर्ख
- कान पर जूँ तक न रेंगना - बिलकुल ध्यान न देना
- कानों-कान ख़बर न होना - गुप्त रहना
- काबुल में भी गधे होते हैं - अच्छे-बुरे लोग सभी जगह मिलते हैं।
- काला अक्षर भैंस बराबर - निरक्षर
- किताबी कीड़ा होना - बहुत पढ़ना

- किराये का टट्टू होना - बेगारी करना, पैसे की लालच से साथ देना
- क्रिस्मत खुलना - सफलता मिलना
- कीचड़ उछालना - बदनाम करना
- कुआँ खोदते फिरना - मरने का प्रयास करना
- कुत्ते की मौत मरना - बुरी तरह मरना
- कूप-मण्डूक होना - सीमित ज्ञान होना
- कोल्हू का बैल होना - रात-दिन परिश्रम करना
- कौड़ी के मोल बिकना - बेकार (सस्ते में नीलाम होना)
- खग जाने खग ही की भाषा - एक साथ रहनेवाले एक-दूसरे का भाव समझते हैं।
- खयाली पुलाव पकाना - मनमानी कल्पनाएँ
- खाक में मिलना - नष्ट हो जाना
- खिल्लियाँ उड़ाना - मज़ाक़ या व्यंग्य करना
- खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे - सबल पर वश न चलने पर निर्बल पर क्रोध प्रदर्शित करना
- खून-पसीना एक करना - अत्यन्त कठोर परिश्रम करना
- गढ़े मुँदे उखाड़ना - पुरानी बातों पर प्रकाश डालना
- गज़भर की छाती होना - अत्यधिक गर्व का अनुभव करना
- गरजने वाले बरसते नहीं - कहने वाले करके नहीं दिखाते
- गरदन पर सवार होना - पीछा न छोड़ना
- गले पर छुरी फेरना - अहित करना
- गागर में सागर भरना - थोड़े में ही बहुत कहना
- गाल बजाना - व्यर्थ की बातें करना
- गिरगिट-सा रंग बदलना - अवसरवादी होना
- गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज - झूठा ढोंग रचना
- गुड़-गोबर होना - काम बिगड़ जाना
- गूलर का फूल होना - कभी दिखायी न पड़ना
- घड़ों पानी पड़ना - अत्यन्त लज्जित होना
- घर का भेदी लंका ढहावै - घर का शत्रु भयंकर होता है
- घर का न घाट का - कहीं का न रहना
- घर की मुर्गी दाल बराबर - अपने साधनों का कोई मूल्य न होना
- घर में भूँजी भाँग न होना - ग़रीब होना
- घाट-घाट का पानी पीना - हर तरह का अनुभव प्राप्त करना
- जले घाव पर नमक छिड़कना - सताये को और सताना
- घी के दीये जलाना - समृद्ध होना; अत्यन्त प्रसन्न होना
- घोंट कर पी जाना - रट लेना
- घोड़े बेचकर सोना - निश्चिन्त होना
- चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय - अत्यधिक कंजूस होना
- चाँदी का जूता मारना - रिश्वत देना
- चारों खाने चित्त होना - बुरी तरह हारना

- चिकना घड़ा होना - किसी बात का प्रभाव न पड़ना
- चुल्लू-भर पानी में डूब मरना - शर्मिंदा होना, ग्लानि होना
- चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना - भयभीत होना
- चोर की दाढ़ी में तिनका - दोषी व्यक्ति स्वयं ही पकड़ जाता है।
- छक्के-छुड़ाना - हरा देना; डँटकर संघर्ष लेना; सामना करना
- छठी का दूध याद आना - अधिक परेशान होना
- छप्पर फाड़ कर देना - बिना परिश्रम किये धन मिलना
- छाती पर बाल होना - उदार होना
- छाती पर साँप लोटना - ईर्ष्या होना
- छोटा मुँह बड़ी बात करना - योग्यता से अधिक बखान करना
- जमीन पर पैर न रखना - अधिक गर्व करना
- जहाँ जाय भूखा वहाँ पड़े सूखा - दुःखी व्यक्ति सर्वत्र दुःख पाता है।
- ज़हर उगलना - ईर्ष्यापूर्ण बातें कहना
- ज़हर की पुड़िया - मुसीबत की जड़
- जिसकी लाठी उसकी भैंस - शक्तिशाली की विजय होती है।
- झख मारना - विवश होकर समय नष्ट करना
- झोली फैलाना - भीख माँगना
- टाँग अड़ाना - अनावश्यक रूप से बाधा उपस्थित करना
- टेढ़ी खीर होना - दुस्साध्य कार्य
- ठोकरें खाना - कष्ट उठाना
- डींग मारना - व्यर्थ की बड़ाई करना
- ढाक के तीन पात - एक मत न होना, कोई परिणाम न निकलना
- तख्ता पलटना - अपदस्थ करना, पदच्युत करना
- तिल का ताड़ बनाना - छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करना
- तूम डाल-डाल हम पात-पात - एक दूसरे से अधिक चालाक होने की होड़
- तूती बोलना - धाक जमाना
- तोता की तरह रटना - बिना समझे याद करना
- थाली का बैंगन - अस्थिर चित्त का व्यक्ति
- थोथा चना बजे घना - अल्प बुद्धि मानव सदा डींग मारता है
- दल-दल में फंसना - संकट में पड़ना
- दांत खट्टै करना - पराजित करना
- दांतों-तले अंगुली दबाना - आश्चर्य करना, भौचक हो जाना
- दाल में काला होना - सन्देह की बात होना
- दिन रात एक करना - निरन्तर प्रयास करते रहना
- दुम दबाकर भाग जाना - डर कर भाग जाना
- दूर के ढोल सुहावने - परिचय के अभाव में दूर की वस्तु प्रिय लगना
- दो नावों में पांव रखना - असमंजस में पड़ना; अवसरवादिता का परिचय देना
- धूप में बाल सफ़ेद होना - अनुभवी होना

- नक्कारखाने में तूती की आवाज़ - बड़ों के बीच में छोटे व्यक्ति की कौन सुनता है ?
- नमक -मिर्च लगाना - बढ़ा-चढ़ा कर कहना
- नस-नस पहचानना - अच्छी तरह जानना
- नाक काटना - प्रतिष्ठा भंग होना
- नाकों-चने चबाना - अधिक परेशान कर देना
- निन्यानबे के फेर में पड़ना - लालच में फँसना, चक्कर में आ जाना
- नौ-दो ग्यारह होना - सबसे आँख बचाकर भाग जाना
- पगड़ी उछालना - बेइज़्जती करना
- पगड़ी रखना - मान-मर्यादा रखना
- पत्थर पर दूब जमाना - असम्भव को भी सम्भव कर दिखाना
- पहाड़ टूट पड़ना - अकस्मात् विपत्ति का आना
- पाँचों अंगुली घी में होना - सब प्रकार का सुख होना
- पानी-पानी होना - लज्जित होना
- पापड़ बेलना - अत्यन्त कष्ट सहना
- पेट में चूहे कूदना - अत्यधिक भूख लगना
- पौ-बारह होना - अधिक लाभ होना
- बगुला-भगत होना - कपटपूर्ण व्यवहार करना
- बत्तीसी बन्द होना - उदासी छा जाना; निराश हो जाना
- बन्दर-घुड़की देना - प्रभावहीन डांट
- बांछें खिलना - अत्यन्त प्रसन्न होना
- बात का बतंगड़ - तनिक-सी बात को बढ़ाना
- बायें हाथ का खेल-किसी काम को आसानी से कर डालना
- बाल की खाल निकालना - अत्यन्त सूक्ष्म तरीके से छान-बीन करना
- बालू से तेल निकालना - असम्भव कार्य करके दिखाना
- बुद्धि पर परदा पड़ना - अक्ल से काम न लेना
- भीगी बिल्ली बन जाना - भयभीत हो जाना
- भूत सवार होना - धुन में संलग्न
- भेड़िया-धँसान होना - बिना विचार किये हुए देखा-देखी काम करना
- माथे पर शिकन न आना - चिन्ता नहीं करना
- मिट्टी का माधौ - मूर्ख, बेकार
- मिट्टी पलीद होना - स्थिति बिगड़ जाना
- मुँह की खाना - हार जाना
- मुट्ठी गरम करना - रिश्वत देना
- मुँछों पर ताव देना - घमण्ड करना
- रंग जमाना - प्रभाव बढ़ाना
- रंग में भंग डालना - विघ्न डालना
- रंगा-सियार होना - कपटी होना
- रफ़ा-दफ़ा करना - समाप्त करना, ले-देकर मामला निपटा देना

- राई का पहाड़ बनाना - थोड़ी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना
- लकड़ी के बल बन्दर नाचे - भय दिखा कर काम कराना
- लकीर का फ़क़ीर होना - प्राचीन परम्पराओं में अटूट विश्वास
- लकीर पीटना - अवसर निकल जाने पर व्यर्थ प्रयत्न करना
- लाल-पीला होना - आग-बबूला होना, क्रोधित होना
- लेने-के-देने पड़ना - संकट में फंस जाना
- लोहा मानना - महत्त्व स्वीकार करना
- वारे-न्यारे करना - अत्यधिक लाभ अर्जित करना
- विष के घूंट पीना - कटु वचन सहन कर लेना
- श्रीगणेश करना - प्रारम्भ करना
- सठिया जाना - बुद्धि भ्रष्ट हो जाना
- सवा सोलह आने सही - पूर्णरूपेण ठीक
- सांप को दूध पिलाना - दुष्ट के साथ उपकार करना
- सिर ऊँचा होना - गर्व का अनुभव करना; सम्मान बढ़ाना
- सिर पर कफ़न बाँधना - मरने को तैयार रहना
- सिर मुड़ाते ओले पड़ना - आरम्भ में ही संकट उत्पन्न होना
- सीधे मुंह बात न करना - घमण्डी होना
- सूर्य को दीपक दिखाना - किसी महान् व्यक्ति की तुच्छ प्रशंसा करना
- सोने में सुगन्ध - अत्यधिक गुणवान्
- हथेली पर सरसों उगाना - असम्भव कार्य करना
- हमारी बिल्ली हमसे म्याऊँ - अपने ही किसी के द्वारा अपना अहित होना
- हवाई किले बनाना - कोरी कल्पना करना
- हाथ-पाँव फूलना - भयभीत हो जाना
- हाथ पीले करना - विवाह करना
- हाथ मलना - पश्चाताप करना
- हुक्का-पानी बन्द होना - बिरादरी से अलग कर देना
- अंगद का पैर होना - दृढ़ता से जम जाना
- अंग्रेजों की नीति अपनाना - फूट डालकर अपना काम बनाने की नीति
- जयचन्द होना - अपनों को छोड़कर दूसरों का साथ देना
- द्रोपदी का चीर होना - अन्त न होना
- बीरबल की खिचड़ी पकाना - अधिक समय तक काम करने पर भी काम का पूरा नहीं होना
- भगीरथ प्रयास - अधिक तथा अनवरत प्रयास
- विभीषण होना - घर का भेदी होना
- हरिश्चन्द्र होना - सत्य पर दृढ़ होना
- सीता-सावित्री बनना - पतिव्रता होना
- त्रिशंकु होना - किसी ओर का न रहना
- गांठ खोलना - कठिनाई दूर करना
- दिल बाग़-बाग़ होना - चित्त प्रसन्न होना

परीक्षोपयोगी कहावतें (लोकोक्तियां)

- अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता - अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता
- अधजल गगरी छलकत जाय - थोड़ी विद्या या धन पाकर इतराना
- अन्धे के हाथ बटेर लगना - बिना परिश्रम के सफलता मिलना
- अपना हाथ जगन्नाथ - स्वयं द्वारा संपन्न कार्यफलदायी होता है
- अपनी करनी-पार उतरनी - अपने कर्म का फल स्वयं भोगना पड़ता है
- अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है। - अपने घर में निर्बल भी सबल दिखायी पड़ता है
- अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग - सबका मत पृथक्- पृथक् होना
- अब पछताये होत का जब चिड़िया चुग गयी खेत - समय निकल जाने पर पछताना; समय निकल जाना
- अशर्फियां लुटे, कोयलों पर पहरा - मूल्यवान की अपेक्षा तुच्छ वस्तु का ध्यान, अल्प व्यय पर सतर्कता
- आंख के अन्धे नाम नयनसुख - गुण के विपरीत नाम
- आ बैल! मुझे मार - जान-बूझकर मुसीबत मोल लेना
- आगे कुआं पीछे खाई - चारों ओर कठिनाई-ही-कठिनाई
- आगे नाथ न पीछे पगहा - जिसका कोई न हो
- आप भला तो जग भला - सभी का अपने-जैसा दिखायी देना
- आम के आम गुठलियों के दाम - दोहरा लाभ
- आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास - प्रमुख कार्य के उद्देश्य को छोड़कर महत्वहीन में लग जाना
- आसमान से गिरा खजूर पर अटका - एक आफ़त से छूटकर दूसरी आफ़त में फंसना
- उलटा चोर कोतवाल को डांटे - दोषी व्यक्ति निर्दोष पर दोष लगाये
- ऊँची दूकान फीका पकवान - दिखावा-ही-दिखावा; आडम्बर- ही-आडम्बर
- ऊँट के मुंह में जीरा - 'नहीं' के बराबर; अत्यल्प
- एक अनार-सौ बीमार - साधन एक मांगने वाले अनेक
- एक तो चोरी दूजे सीना जोरी - अपराध स्वीकार न करके रोब गांठना
- एक हाथ से ताली नहीं बजती - दोस्ती या लेनदेन में दोनों पक्ष की सहमति होनी चाहिए
- ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना - कार्य आरम्भ करने पर अंजाम की परवाह न करना
- क़ब्र में पांव लटकना - मृत्यु के करीब होना
- कहां राजा भोज, कहां गंगू तेली - दो असमान व्यक्तियों की तुलना
- का वर्षा जब कृषी सूखानी - अवसर निकल जाने पर सहायता देना व्यर्थ
- काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती - कपटपूर्ण व्यवहार एक बार ही चलता है
- काला अक्षर भैंस बराबर - अनपढ़ मनुष्य
- कोठीवाला रोवे छप्परवाला सोवे - अधिक धन चिन्ता का कारण होता है
- कोयले की दलाली में हाथ काले - बुरी संगति में कलंक लगता है
- खग जानै खग की भाषा - जो जिस संगति में रहता है, वह उसका पूरा भेद जानता है
- खेत खाय गदहा मार खाये जुलहा - निरपराध को दण्डित करना
- खोदा पहाड़ निकली चुहिया - अधिक परिश्रम के बाद अत्यन्त साधारण
- गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज - झूठा ढोंग रचना

- चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय - अत्यधिक कंजूस
- चलती का नाम गाड़ी - सफलता से यश मिलता है
- चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात - प्रसन्नता का समय अल्प होता है
- चोर-चोर मौसेरे भाई - दुष्टों के बीच मित्रता होना
- चोर की दाढ़ी में तिनका - अपराधी सदैव सशंक रहता है
- छछून्दर के सिर में चमेली का तेल - अयोग्य अथवा अपात्र को अच्छी वस्तु की प्राप्ति
- जल में रहकर मगर से बैर - आश्रयदाता से शत्रुता नहीं रखनी चाहिए
- जस दूल्हा तस बनी बाराता - बुरे को बुरों का साथ मिलना
- जान है तो जहान है - अपने जीते-जी ही सब कुछ है
- जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना - किये का उपकार न मानना
- जैसी करनी वैसी भरनी - कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति
- डूबते को तिनके का सहारा - संकट के समय थोड़ी सी सहायता पर्याप्त होती है
- थोथा चना, बाजे घना - असमर्थ व्यक्ति अधिक बात करता है; महत्त्वहीन को आडम्बर की आवश्यकता होती है
- दाल-भात में मूसलचन्द - दो के बीच में तीसरे का बिना काम के घुस जाना, खलल डालना
- दुधारु गाय की लात भली - जिससे लाभ हो, दो-चार खरी-खोटी भी बुरी नहीं लगती
- दुविधा में दोऊ गये, माया मिली न राम - एक साथ दो कार्य नहीं हो सकते
- दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है - एक बार की हानि भविष्य के लिए सचेत कर देती है
- दोनों हाथ में लड्डू होना - दोनों ओर लाभ-ही-लाभ होना
- न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी - कारणों को नष्ट कर देना
- नाच न जाने आंगन टेढ़ा - काम न जानने पर झूठा बहाना बनाना
- नीम हकीम ख़तरे जान - अल्पज्ञ से सदा ख़तरे की आशंका
- नौ नगद न तेरह उधार - जो कुछ नक़द मिले, बहुत अच्छा है।
- पेट पर लात मारना - भुखमरी की दशा होना
- बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद - गुणवान् ही गुणों को पहचानता है
- बिल्ली के गले में घण्टी बांधना - खुद को संकट में डालना
- बोया पेड़ बबूल का आम कहां से होय - बुरे काम का फल बुरा ही होता है
- भागते भूत की लंगोटी भली - जहां से कुछ मिलने की आशा न हो वहां से जो कुछ मिले, वही बहुत है
- भैंस के आगे बीन बजाना - बुद्धिहीन को उपदेश देना
- मानो तो देव, नहीं तो पत्थर - विश्वास ही सब कुछ है
- मुंह में राम बगल में छुरी - ऊपर से मीठा परन्तु हृदय में कपट रखना
- लातों के देवता बातों से नहीं मानते - दुष्ट बिना ताड़ना के ठीक नहीं होते
- सब धान बाईस पसेरी - सभी के साथ एक-जैसा व्यवहार
- सांप-छछून्दर की गति होना - असमंजस की स्थिति में पड़ना
- सांप भी मर जाए, लाठी भी न टूटे - काम निकल जाए और हानि भी न हो
- सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना - कार्य के प्रारम्भ में ही विघ्न पड़ना
- सौ सोनार की एक लोहार की - निर्बल की सौ चोटों की अपेक्षा बलवान की एक चोट काफ़ी होती है
- हरे लगे न फिटकरी रंग चोखा होय - खर्च भी न हो और बात भी बन जाए
- होनहार बिरवान के होत चीकने पात - महान् व्यक्ति के लक्षण बचपन से ही प्रकट होने लगते हैं

प्रसिद्ध रचना और रचनाकार

- मुंशी प्रेमचन्द (मूल नाम : धनपत राय) - वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, निर्मला, रंगभूमि, 'गबन, कर्मभूमि, गोदान, सोजेवतन, बड़े घर की बेटी, कफ़न, प्रेम पचीसी, पंच परमेश्वर
- फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, परती परिकथा, तीसरी कसम, ठुमरी, रसपिरिया
- भगवती चरण वर्मा - चित्रलेखा, सबहिं नचावत राम गुसाई, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, आखिरी दाँव
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र - वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, प्रेम जोगिनी, सत्य हरिश्चन्द्र, भारत दुर्दशा, भारत जननी, नील देवी, अँधेर नगरी,
- भीष्म साहनी - चीफ की दावत, तमस, कड़ियाँ
- नागार्जुन (मूल नाम : वैद्यनाथ मिश्र) - अकाल और उसके बाद, बहुत दिनों के बाद, शासन की बन्दूक, आओ रानी हम ढोएँगे पालकी, पुरानी जूतियों का कोरस; रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे
- निर्मल वर्मा - दहलीज, कुत्ते की मौत, लंदन की एक दिन का महमान
- विद्यापति - दुर्गाभक्ति तरंगिणी, कीर्तिलता, कीर्त्तिपताका, पदावली
- विष्णु प्रभाकर - आवारा मसीहा, समाधि, प्रकाश और परछाई, पाप का घड़ा, मोतियों की खेती
- वृन्दावनलाल वर्मा - झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, मृगनयनी, अहिल्याबाई, राखी की लाज, नीलकण्ठ,
- श्रीलाल शुक्ल - अंगद का पाँव, अज्ञातवास, रागदरबारी
- सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' - आँगन के पार द्वार, शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी, शरणार्थी
- चन्द बरदाई - पृथ्वीराज रासो (हिन्दी का प्रथम विस्तृत महाकाव्य)
- जयशंकर प्रसाद - कामायनी, विशाखदत्त, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, कंकाल, तितली
- जैनेन्द्र कुमार - सुनीता, त्यागपत्र, मुक्तिबोध,
- (गोस्वामी) तुलसीदास - रामचरितमानस, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, गीतावली, भरत मिलाप, हनुमान् चालीसा
- देवकीनन्दन खत्री - कुसुमकुमारी, भूतनाथ, चन्द्रकान्ता सन्तति
- धर्मवीर भारती - गुनाहों का देवता, अन्धा युग, सूरज का सातवां घोड़ा
- कमलेश्वर - पीला गुलाब, कितने पाकिस्तान, डाक बंगला
- गजानन माधव 'मुक्तिबोध' - चाँद का मुँह टेढ़ा है, अंधेरे में, काठ का सपना
- अन्दुरहीम खानखानाँ - शृंगार सतसई, मदनाष्टक, राम पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली
- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' - प्रेमप्रपंच, ऋतुमुकुर, रसकलस, प्रियप्रवास, बाल विलास, कल्पलता
- सुमित्रानन्दन पन्त - पल्लव, वीणा, युगवाणी, रश्मिबन्ध
- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - अनामिका, राम की शक्ति पूजा, कुकुरमुत्ता, नये पत्ते, सरोज-स्मृति, कुल्ली भाट
- मनोहर श्याम जोशी - कुरु कुरु स्वाहा, कपस, मुंगेरीलाल के हसीन सपने
- मलिक मुहम्मद जायसी - आखिरी कलाम, पद्मावत
- महादेवी वर्मा - सान्ध्यगीत, यामा, दीपशिखा, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ
- माखनलाल चतुर्वेदी - माता हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, समर्पण
- मैथिलीशरण गुप्त - रंग में भंग, जयद्रथ-वध, भारत-भारती, पंचवटी, गुरुकुल साकेत, यशोधरा, काबा और कर्बला, जयभारत, राजा-प्रजा, पलासी का युद्ध
- मोहन राकेश - आसाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे
- यशपाल - झूठा सच, दादा कामरेड, देशद्रोही, दिव्या, फूलों का कुर्ता
- रामधारी सिंह 'दिनकर' - प्रणभंग, हुंकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, बापू, रश्मिरथी, नीलकुसुम, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, नीम के पत्ते, संस्कृति के चार अध्याय, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, हारे को हरिनाम

- रामवृक्ष बेनीपुरी - गेहूँ और गुलाब, माटी की मूरतें, लाल तारा, मील के पत्थर
- राहुल सांकृत्यायन - विस्मृत यात्रा, मधुर स्वप्न

प्रसिद्ध पंक्तियां एवं उनके रचनाकार

- बारह बरस लौं कूकर जीवै अरु तेरह लौं जिये सियार/
बरस अठारह क्षत्रिय जीवै आगे जीवन को धिक्कार - जगनिक
- काहे को बियाहे परदेस सुन बाबुल मोरे (गीत) - अमीर खुसरो
- बहुत कठिन है डगर पनघट की (कव्वाली) - अमीर खुसरो
- एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा/चारो ओर
वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे (पहेली) - अमीर खुसरो
- नित मेरे घर आवत है रात गये फिर जावत है/फंसत अमावस
गोरी के फंदा हे सखि साजन, ना सखि, चंदा (मुकरी/कहमुकरनी) - अमीर खुसरो
- गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस/चल खुसरो घर आपने
रैन भई चहुं देस (अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु पर) - अमीर खुसरो
- गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंग दियो बताय॥ - कबीर
- पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोई।
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होई। - कबीर
- जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान॥ - कबीर
- मुझको क्या तू दूढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास रे। - कबीर
- दशरथ सुत तिहुं लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना
- सिया राममय सब जग जानी, करऊं प्रणाम जोरि जुग पानि। - तुलसीदास
- जब जब होई धरम की हानी। बढहिं असुर अधक अभिमानी।
तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा। हरहिं सकल सज्जन भवपीरा॥ - तुलसीदास
- कत विधि सृजी नारी जग माहीं, पराधीन सपनेहु सुख नाहीं - तुलसीदास
- बड़ा भाग मानुष तन पावा,
सुर दुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा। - तुलसीदास
- अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम॥ - मलूकदास
- जाति-पाति पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई। - रामानंद
- अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेल बोई। - मीरा
- घायल की गत घायल जानै और न जानै कोई। - मीरा
- बसो मेरे नैनन में नंदलाल,
मोहनि मूरत, सांवरि सूरत, नैना बने रसाल। - मीरा
- रोवहू सब मिलि, आवहु 'भारत भाई'।
हा! हा! भारत-दुर्दशा न देखी जाई। - भारतेन्दु
- अंगरेज-राज सुख साज सजे सब भारी।

- पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्यारी॥ - भारतेन्दु
- भीतर-भीतर सब रस चूसै, हंसि-हंसि के तन मन धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन! नहीं अंगरेज॥ - भारतेन्दु
- निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल॥ - भारतेन्दु
- हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी,
आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी। ('भारत-भारती')
- हां, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ? (भारत-भारती)
- अबला जीवन हाथ तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी॥ ('यशोधरा')
- केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए। (भारत-भारती)
- अधिकार खोकर बैठना यह महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है। ('जयद्रथ वध')
- संदेश नहीं मैं यहां स्वर्ग को लाया,
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया। ('साकेत')
- पराधीन रहकर अपना सुख शोक न कह सकता है।
यह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता है॥
- मैंने मैं शैली अपनाई
देखा एक दुःखी निज भाई। - निराला
- धन्ये, मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित न कर सका। - निराला
- शेरों की मांद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार। - निराला
- दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे। ('संध्या सुंदरी') - निराला
- नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में। - जय शंकर प्रसाद
- जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छाई,
दुर्दिन में आंसू बनकर
वह आज बरसने आई। ('आंसू')
- जिए तो सदा उसी के लिए यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दे हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारतवर्ष। ('स्कंदगुप्त')
- जय शंकर प्रसाद

- अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहां पहुंच अनजान झितिज को मिलता एक सहारा। ('चन्द्रगुप्त') - जय शंकर प्रसाद
- तोड़ दो यह झितिज, मैं भी देख लूं उस ओर क्या है ?
जा रहे जिस पंथ से युग कल्प, उसका छोर क्या है ? - महादेवी
- वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।
उमड़ कर आंखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान। - सुमित्रानंदन पंत
- बापू के भी ताऊ निकले
तीनों बंदर बापू के
सरल सूत्र उलझाऊ निकले
तीनों बंदर बापू के। - नागार्जुन
- खेत हमारे, भूमि हमारी
सारा देश हमारा है
इसलिए तो हमको इसका
चप्पा-चप्पा प्यारा है। - नागार्जुन
- झुका यूनियन जैक
तिरंगा फिर ऊँचा लहराया
बांध तोड़ कर देखो कैसे जन समूह लहराया। - राम विलास शर्मा
- जिंदगी, दो उंगलियों में दबी
सस्ती सिगरेट के जलते हुए टुकड़े की तरह है
जिसे कुछ लम्हों में पीकर
गली में फेंक दूंगा। - नरेश मेहता

प्रमुख पत्र-पत्रिकाएं

- **बंगाल गजट** - 1780, साप्ताहिक अंग्रेजी (संपादक : जेम्स आगस्टस हिकी) भारत का प्रथम समाचारपत्र
- **उदंत मार्तण्ड** - 30 मई, 1826, साप्ताहिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : पं. जुगलकिशोर शुक्ल, (प्रथम हिन्दी पत्र)
- **बंगदूत** - 1829, साप्ताहिक, कलकत्ता, संपादक : राजा राममोहन राय
- **बनारस अखबार** - 1849, काशी से प्रकाशित, संपादक : राजा शिवप्रसाद 'तिसारे हिन्द', हिन्दी प्रदेश से प्रकाशित पहला हिन्दी समाचारपत्र
- **प्रजा हितैषी** - 1855, आगरा से प्रकाशित, संपादक : राजा लक्ष्मणसिंह
- **कविवचन सुधा** : 15 अगस्त, 1867, मासिक पत्रिका संपादक : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- **हिन्दी प्रदीप** - 1877, मासिक, इलाहाबाद, संपादक : बालकृष्ण भट्ट
- **सरस्वती** - 1900, मासिक, इलाहाबाद (प्रारंभ में काशी से); संपादक : श्याम सुन्दर दास व चार अन्य (1900-03), महावीर प्रसाद द्विवेदी (1903-20), पं. देवीदत्त शुक्ल (1920-47)
- **प्रताप** - 1913, साप्ताहिक, कानपुर से प्रकाशित, संपादक : गणेश शंकर विद्यार्थी
- **प्रभा** - 1913, मासिक, खण्डवा (कानपुर), संपादक : कालूराम, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी
- **मतवाला** - 1923, साप्ताहिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : 'निराला'
- **हंस** : 1930 : मासिक, बनारस, संपादक : प्रेमचंद
- **जागरण** - 1932, साप्ताहिक, बनारस, प्रेमचंद,
- **धर्मयुग** - 1950, साप्ताहिक, बंबई, संपादक : धर्मवीर भारती

- आलोचना - 1951, त्रैमासिक, दिल्ली, संपादक : शिवदान सिंह चौहान, नामवर सिंह
- पहल - 1960, त्रैमासिक, जयपुर, संपादक : ज्ञानरंजन
- दिनमान - 1965, साप्ताहिक, दिल्ली, संपादक : रघुवीर सहाय
- पूर्वग्रह - 1974, मासिक, भोपाल, संपादक : अशोक बाजपेयी

हिन्दी की प्रमुख संस्थाएं एवं स्थापना वर्ष

1. फोर्ट विलियम कालेज, कलकता - 1801 ई.
2. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी - 1893 ई. (संस्थापक-श्याम सुंदर दास, राम नारायण मिश्र व शिव कुमार सिंह)
3. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग - 1910 ई. ((प्रथम सभापति-मदन मोहन मालवीय)
4. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार संस्था, मद्रास - 1915 ई. (संस्थापक-महात्मा गाँधी)
5. अखिल भारतीय संगीत परिषद - 1919 ई.
6. प्रगतिशील लेखक संघ - 1936 ई. (प्रथम अधिवेशन-लखनऊ, प्रथम सभापति-प्रेमचंद)
7. साहित्य अकादमी - 1953 ई. (भारत सरकार द्वारा)
8. संगीत नाटक अकादमी - 1953 ई. (भारत सरकार द्वारा)
9. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली - 1959 ई.

रस

परिभाषा - कविता, कहानी उपन्यास, नाटक आदि साहित्य के विविध विधाओं को पढ़ने, सुनने ओर देखने से जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं। अनेक रसाचार्यों ने अपनी अनुभूतियों के आधार पर रस की भिन्न-भिन्न परिभाषाएं दी हैं।

भेद - रस के मुख्यतः 9 प्रकार होते हैं :

1. शृंगार-रस 2. हास्य-रस 3. करुण-रस 4. रौद्र-रस 5. वीर-रस
6. भयानक-रस 7. वीभत्स-रस 8. अद्भुत-रस 9. शान्त-रस।

रस	स्थायीभाव
शृंगार रस	रति
हास्य रस	हास
करुण रस	शोक
रौद्र रस	क्रोध
वीर रस	उत्साह
भयानक रस	भय
वीभत्स रस	जुगुप्सा
अद्भुत रस	विस्मय
शान्त रस	निर्वेद

1. शृंगार-रस - नायक-नायिका के पारस्परिक प्रेम से शृंगार-रस की निष्पत्ति होती है।

शृंगार-रस के 2 भेद हैं :

(1) संयोग शृंगार (2) वियोग (बिप्रलम्भ) शृंगार।

संयोग शृंगार - पुरुष (नायक) और स्त्री (नायिका) के पारस्परिक दर्शन, आलिंगन, संलाप, चुम्बन आदि से संयोग शृंगार की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण के लिए

राम के रूप निहारति जानकी, कंगन के नग की परछाहीं।

यातों सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही, पल टारनि नाहीं।

वियोग (विप्रलम्भ) शृंगार - नायक और नायिका के संयोग के अभाव में वियोग शृंगार की उत्पत्ति होती है।
उदाहरण के लिए

“श्याम सुरति करि राधिका, तकति तरनिजा तीर।

अंसुवन करति तरौंस को, खिन खौरौंहों नीर॥”

2. **हास्य-रस** - विकृत वेश-भूषा, वाणी, कार्य, चेष्टादि से हास्य-रस की उत्पत्ति होती है।
3. **करुण-रस** - प्रिय के नाश, अथवा अनर्थ अथवा अपने अनिष्ट से करुण-रस की उत्पत्ति होती है।
4. **रौद्र-रस** - अपनी अथवा अपने प्रिय की निन्दा, हानि, विरोध आदि से रौद्र-रस की उत्पत्ति होती है।
5. **वीर-रस** - युद्ध अथवा अन्य दुष्कर कार्य करने के लिए उत्पन्न उत्साह से वीर-रस की उत्पत्ति होती है।
6. **भयानक-रस** - भयानक वस्तु को देखने से उत्पन्न भय से भयानक-रस की उत्पत्ति होती है। उदाहरण के लिए ?
7. **बीभत्स-रस** - घृणा उत्पन्न करनेवाली वस्तु को देखकर बीभत्स-रस की उत्पत्ति होती है।
8. **अद्भुत-रस** - आश्चर्यजनक वस्तु के वर्णन से अद्भुत रस की उत्पत्ति होती है।
9. **शान्त-रस** - वैराग्य से शान्त रस की उत्पत्ति होती है।
10. **वात्सल्य-रस** - बच्चों की बाल-सुलभ मानसिक क्रियाकलाप से सम्बन्धित वर्णन से जो वात्सल्य उमड़ती है, यह ‘वात्सल्य रस’ की सृष्टि करती है।

अलंकार

जिस प्रकार आभूषणों को धारण करने से नारी के सहज सौन्दर्य में आकर्षण और निखार में अभिवृद्धि होती है उसी प्रकार वाणी को आकर्षक और प्रभावी बनानेवाले तत्त्वों को अलंकार माना गया है।

अलंकारों की निश्चित संख्या कितनी है, इस पर विद्वानों में मतभिन्नता है।

अलंकार को मुख्यतः दो भागों में बांटा गया है—

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार।

शब्दालंकार - जहां शब्दों के कारण वाक्य में रमणीयता आती है वहां शब्दालंकार होता है।

भेद - प्रमुख शब्दालंकार चार प्रकार के होते हैं :

1. अनुप्रास
2. यमक
3. श्लेष
4. वक्रोक्ति।

- 1 **अनुप्रास** - जिस वाक्य, काव्य अथवा काव्यांश में वर्णों की आवृत्ति हो, उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं।

उदाहरण के लिए,

मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमन्त बुलाये॥

इस चौपाई के पूर्वाद्ध में **म** और उत्तराद्ध **स** की तीन-तीन बार आवृत्ति हुई है किन्तु इनमें स्वरों का मेल नहीं है। कहीं-कहीं स्वर भी मिल जाते हैं।

- 2 **यमक** - जहां एक शब्द की आवृत्ति दो अथवा दो से अधिक बार होती है किन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है, वहां यमक अलंकार होता है।

दूसरे शब्दों में-इसका मूलाधार शब्दावृत्ति के साथ अर्थ की विभिन्नता है।

उदाहरण के लिए,

कनक-कनक ते सौ गुना मादकता अधिकाय

यहां कनक दो बार आया है और दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं -

एक सोना, दूसरा धतुरा

- 3 **श्लेष** - माया महाठगिनी हम जानी।

तिरगुन फांस लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।

यहां तिरगुन शब्द में शब्द-श्लेष की योजना है इसके दो अर्थ हैं-

(1) तीन गुण-सत्त्व (सत), रजस् (रज) और तामस् (तम)।

(2) तीन भागांवाली रस्सी। प्रसंगानुसार ये दोनों अर्थ युक्तियुक्त हैं।

- 4 **वक्रोक्ति** - जहां किसी उक्ति (कथन) का श्रोता श्लेष (दो अथवा दो से अधिक अर्थ) के कारण अथवा काकु (व्यंग्य) द्वारा इच्छित अर्थ से अन्य अर्थ लगये, वहां वक्रोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण के लिए,

को तुम हो इत आये कहां?

घनश्याम हैं, तो कितहूं बरसौ।

यहां राधिका कृष्ण का परिहास करती हुई पूछती हैं, “आप कौन हैं और इधर कहां आये हैं ?”

इस पर कृष्ण उत्तर देते हुए कहते हैं, “हम घनश्याम (कृष्ण) हैं।”

राधिका घनश्याम शब्द का अन्य अर्थ (जल से भरा हुआ) **काला बादल** लगाती हुई कहती हैं, “तो आप कहीं जाकर जल बरसाइए।”

इस प्रकार यह वक्रोक्ति है।

अर्थालंकार - जहाँ अर्थ के आधार पर वाक्य-भाव में रमणीयता आती है, वहां अर्थालंकार होता है।

1. **उपमा** - समान धर्म, स्वभाव, शोभा, गुण आदि के आधार पर जहां एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहां उपमा अलंकार होता है।
2. **रूपक** - जहां उपमेय पर उपमान का आरोप कर दिया जाए, वहां ‘रूपक अलंकार’ होता है। इसमें समानता-वाचक पद का कथन नहीं होता है।

उदाहरण के लिए,

1. समय-सिन्धु चंचल है भारी।

2. चरण-कमल बन्दौं हरि राई।

3. भक्ति-नदी में क्यों न नहाकर,
कर लेता है, जीवन शीतल।

4. रनित मंद आवत चल्याँ, कुंजरु कुंज समीर।।

5. मुक्ति-मुक्ता को मोलमाल ही कहां है जब।
मोहन लला पै मन-मानिक ही वार चुकी।।

3. **उत्प्रेक्षा** - जहां उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाए, वहां ‘उत्प्रेक्ष अलंकार’ होता है।

उत्प्रेक्षा का अर्थ है-उत्कट रूप में प्रेक्षण (देखना) अर्थात् उपमेय में उपमान को प्रबल रूप में देखना।

वाचक पद - मनु, जनु, इव, मानो, मनो, मनहु आदि

उदाहरण के लिए,

1. गोरे मुख पै स्याम तिल लगै बहुत अभिराम।

मानहु चन्द बिछाईकै पौढ़े सालिग्राम।।

2. इस काल मानौ क्रोध से तन कांपने उनका लगा।

मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।

3. तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।

झुके कुल सों जल परसन हित मनहुं सुहाये।।

- 4 **भ्रान्तिमान** - जहां सादृश्य के आधार पर किसी वस्तु को कुछ और ही समझकर उसका चमत्कारपूर्ण वर्णन किया जाए, वहां भ्रान्तिमान अलंकार होता है।

उदाहरण के लिए,

यह काया है या शेष उसी की छाया।

क्षण भर उनको कुछ नहीं समझ में आया।।

अशोक वाटिका में बैठी सीता को देखकर हनुमान को सन्देह होता है यह मेघ से अलग हुई विद्युत् है अथवा लता। बाद में सीता की लम्बी उच्छ्वासों को देखकर हनुमान यह निश्चय कर पाते हैं कि यही सीता हैं।

यहां आरम्भ में तो सन्देह है किन्तु अन्ततोगत्वा सन्देह मिट जाता है।

5 **अन्योक्ति** - जहां मात्र अप्रस्तुत के वर्णन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाए वहां अन्योक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण के लिए,

नहिं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास यहि काल।

अली कली ही ते बंध्यो, आगे कौन हवाल।।

यहां कवि बिहारी ने भौरै को लक्ष्य कर महाराज जयसिंह को उनकी यथार्थ-स्थिति का बोध कराया है, जो अपनी छोटी रानी के प्रेमपाश में आबद्ध रहने के कारण अपने राज-काज को भूल बैठे थे।

6 **अतिशयोक्ति** - जहां किसी वस्तु का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए कि वह लोक-मर्यादा का उल्लंघन कर जाए वहां **अतिशयोक्ति** अलंकार होता है।

उदाहरण के लिए,

जुग उरोज तेरे अली, नित-नित अधिक बढ़ाय।

अब इन भुज लतिकान में, ऐ री नाहिं समाय।।

उरोज (स्तन) कितने भी बड़े क्यों न हो जाएं पर वे दोनों भुजाओं के मध्य ही रहेंगे फिर भी उनका भुजाओं के बीच न अंटना कहकर, सम्बन्ध में असम्बद्ध प्रदर्शित करता है। इस प्रकार यहां अतिशयोक्ति है।

7 **मानवीकरण** - (अमानव (प्रकृति, पशु-पक्षी व निर्जीव पदार्थ) में मानवीय गुणों का आरोपण)

उदा.- जगीं वनस्पतियां अलसाईं, मुख धोती शीतल जल से।

प्रसिद्ध भारतीय पुस्तकें एवं उनके लेखक

पुस्तक	लेखक
1. रामायण	बाल्मीकि
2. भगवद्गीता	वेदव्यास
महाभारत	
3. पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
4. अष्टाध्यायी	पाणिनी
5. कामसूत्र	वात्स्यायन
6. कादम्बरी	बाणभट्ट
7. अर्थशास्त्र	चाणक्य
8. बुद्धचरितम्	अश्वघोष
9. मृच्छकटिकम्	शूद्रक
10. कुमारसंभवम्	कालिदास
अभिज्ञान शाकुन्तलम्	
रघुवंशम्	
11. मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
12. राजतरंगिणी	कल्हण
13. गीतगोविन्द	जयदेव
14. अमरकोष	अमर सिंह
15. मिताक्षरा	विज्ञानेश्वर
16. पद्मावत	मल्लिक मो. जायसी
17. सूरसागर	सूरदास
18. रामचरित मानस	तुलसीदास

19. बीजक, रमैनी सबद	कबीरदास
20. आईने अकबरी अकबरनामा	अबुल फजल
21. हुमायूंनामा	गुलबदन बेगम
22. किताबुल हिन्द	अलबरूनी
23. शाहनामा	फिरदौसी
24. नीति शतक शृंगार शतक वैराग्य शतक	भर्तृहरि
पुस्तक	लेखक
25. मालती माधव	भवभूति
26. नेचुरल हिस्ट्री	प्लिनी
27. प्रेमवाटिका	रसखान
28. भारत-भारती	मैथिलीशरणगुप्त
29. देवदास चरित्रहीन	शरतचन्द्र
30. गीतांजलि चित्रांगदा विसर्जन गोरा	रवीन्द्र नाथ टैगोर
31. आनन्दमठ	वंकिमचन्द्र चटर्जी
32. चंद्रकांता	देवकीनन्दन खत्री
33. अंधेर नगरी भारत दुर्दशा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
34. चिदंबरा	सुमित्रानन्दन पंत
35. कुली	मुल्कराज आनन्द
36. दादा कामरेड	यशपाल
37. गोदान रंगभूमि कर्मभूमि	प्रेमचन्द
38. कामायनी आंस्, चंद्रगुप्त	जयशंकर प्रसाद
39. अनामिका	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
40. गुनाहों का देवता	धर्मवीर भारती
41. आसाढ़ का एक दिन	मोहन राकेश
42. कुरुक्षेत्र उर्वसी	रामधारी सिंह 'दिनकर'
43. चित्रलेखा	भगवतीचरण वर्मा
44. कितने पाकिस्तान	कमलेश्वर